स्नातक (अनुषंगिकी)

प्रथम खण्ड

पंचम आख्यान

डॉ० राम कुमार राय
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग,
वि० वि० जनता महाविद्यालय, राजनगर

अलंकार (विभावना, काव्यलिंग)

* विभावना :-

विभावनाक अर्थ होइत अछि विशिष्ट (वि०) कल्पना (भावना)। कारणक अभावहुँ मे कार्योत्पत्तिक कथन तँ वस्तुतः विशिष्ट कल्पनेटा संभव अछि। सामान्य एवं प्रसिद्ध कल्पना तँ इएह अछि जे कारण रहलेपर कार्यक उत्पत्ति होइत अछि। अतः कारणक अभावमे कार्यक उत्पत्ति जत कथित रहैत अछि तत विभावना अलंकार होइत अछि।

उदाहरण

तुहिन शीतलो चन्द्रओ देथ बिरहि कैं दाह।
दैव विमुख भेले जनक मीतो कर अवलाह।।

एत प्रथम पंक्तिमे तुहिन सदृश शीतल चन्द्रमा विरहीकें सन्तप्त करैत अछि से कहल गेल अछि। वस्तुतः सन्तप्त होयबाक कारण उष्णता

Scanned with CamSc

अछि किन्तु जे एत अल्प कारणसँ पूर्ण कार्योत्पत्तिक वर्णन भेल अछि तेँ एत विभावना अलंकार भेल।

कारण सम्बन्धी विलक्षण कल्पनाक आधारपर विभावना अलंकारक 6 (छः) भेद मानल गेल अछि —

प्रथम विभावना ओत होइत अछि जत कारणक अभावमे कार्योत्पत्ति कथित होइत अछि। द्वितीय विभावना ओत होइत अछि जत अपूर्ण कारणसँ पूर्ण कार्यक सिद्धि वर्णित रहैत अछि। तृतीय विभावना ओत मानल जाइछ जत बाधा रहितहुँ कार्यक सिद्धि देखाओल जाइत अछि। चतुर्थ विभावना ओत होइत अछि जत कारणक अभावहुमे विलक्षण कल्पनासँ ओकरा कोनो दोसर वस्तुक हेतु कथित रहैत अछि। पंचम विभावना ओत मानल जाइछ जत विरुद्ध कारणसँ कार्यक सिद्धि वर्णित रहैछ। षष्ठ विभावना ओत होइत अछि जत कार्यसँ कारणक होयब वर्णित रहैत अछि।

* काव्यलिंग :—

लिंगक अर्थ होइछ कारण, अतः काव्यलिंगक अर्थ भेल काव्यक कारण अर्थात ओहन कारण जकर काव्यमे उपयोग होइत होअय।

Scanned with CamSc

अतः जत वाक्यार्थ वा पदार्थ रूपसँ हेतुक प्रतिपादन कयल जाय तत काव्यलिंग अलंकार होइत अछि।

उदाहरण

ई स्तुति सुनि हरि तनिकाँ उठाए
दुहु कर सँ लेलन्हि उर लगाए।
छवि कें रहन कारुणिक आन
जे भावहुँ जन कृतकृत्य जान॥

उदाहृत पद्यक तेसर एवं चारिम पंक्तिके काव्यलिंग अलंकार अछि कारण ई दुनू पाँती प्रथम एवं दोसर भावक कारण बनि आयल अछि।

काव्यलिंग अलंकारके दू भेद होइछ–

1. वाक्यार्थगत – सम्पूर्ण वाक्यार्थ कारण रूपे रहैछ तत वाक्यार्थगत काव्यलिंग भेल।
2. पदार्थगत ! – मात्र पदार्थ सँ कार्य चलि जाइछ तत पदार्थगत काव्यलिंग मानल जाइत अछि।

समाप्त

स्रोत :- मैथिली काव्यशास्त्र – डा॰ दिनेश कुमार झा

Scanned with CamSc